SWARA SHAILESH GAJMAL
VIII LILY 23

Page No.
Date

शीर्षक - विरामचिह्नों के सदुपयोग

नमस्ते। उपस्थित शिक्षकों और मित्रों; मैं स्वरा गजमल कक्षा आठवीं लिली की छात्रा, आपके समक्ष 'विरामचिह्नों के सदुपयोग', इस विषय पर अपने विचार प्रकट करने आई हूँ।

तनिक सोचिए, क्या हम बगैर विरामचिह्नों के हिंदी भाषा या अन्य सारी भाषाएँ लिख पाते? बिल्कुल नहीं।

हम अपने विचार या भावनाओं को दर्शाने के लिए शब्दों में उतार-चढ़ाव या हाव-भाव में परिवर्तन लाते हैं। यह तो भाषा का मौखिक रूप हुआ; परंतु लिखते समय उसके लिए विशेष चिह्न नियत किए हैं, जिन्हें विरामचिह्न कहते हैं।

बोलते समय हम कहाँ, कितनी देर ठहरे, हमारी भावना को बयाँ करने का कार्य ये चिह्न करते हैं। हिंदी भाषा में कुल अठारह विरामचिह्न हैं। उनके कुछ नाम :- अपूर्णविराम, लाघव चिह्न, त्रुटिपूरक चिह्न, दीर्घ उच्चारण, पूर्णविराम, अल्पविराम आदि हैं।

पं.जवाहरलाल नेहरू, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम लिखते वक्त पंडित को पं. और डॉक्टर को डॉ. लिखकर लाघव चिह्न का इस्तेमाल कर संक्षेप में लिख सकते हैं। छोटा बच्चा अपनी माँ को पुकारता है - माँSSS इस शब्द को खींचते वक्त दीर्घ उच्चारण चिह्न का उपयोग करते हैं।

परीक्षा के अंत में निबंध लिखते वक्त अक्सर हमसे कोई गलती हो जाती तो हम त्रुटिपूरक चिह्न का प्रयोग करते हैं। इनही विभिन्न चिह्नों से वाक्यों के अर्थ में सार्थकता आती है। भाषा में लेखन की शुद्धता के लिए विरामचिह्नों का प्रयोग अत्यंत उपयोगी है।

इन शब्दों से मैं अपना भाषण समाप्त करती हूँ। धन्यवाद।